The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 5 | May 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

# इन्दौर शहर के माध्यमिक विद्यालय स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन

**तन्विंदर कौर काका**
ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी,इन्दौर म.प्र.
tanvindar13@gmail.com

**डॉ. रमनप्रीत कौर**
ओरिएण्टल यूनिवर्सिटी,इन्दौर म.प्र
raman preetkaur@orientaluniversity.in

**डॉ. शमशेर सिंह काका**
श. अध्यापक शिक्षा महाविद्यालय देवास म.प्र.
ssskaka13@gmail.com

**ARTICLE DETAILS**

**Research Paper**

**Accepted:** 28-05-2025

**Published:** 10-06-2025

**Keywords:**

*व्यक्तित्व, बुद्धि, तुलनात्मकता*

**ABSTRACT**

शिक्षक भारत देश के निर्माता हैं इसीलिए कहा गया है कि भारत देश के भविष्य निर्माण विद्यालय की चार दीवारों में संपन्न होता है। किसी भी देश के भविष्य के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि है। विद्यालयीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना हैं | ताकि वह अपना व अपने समाज का विकास कर सके | इसलिए समाज विद्यालय के द्वारा छात्राओं के व्यक्तित्व के अनुसार उसे आगे की शिक्षा में दिशा निर्देशन किया जाता हैं | जिससे उसे पूर्व निर्धारित उपलब्धि प्राप्त हो सके | बालक के विद्यालयीन उद्देशों को सर्वश्रेष्ठ सीमा तक प्राप्त करने में बालक की समायोजन क्षमता बालक का व्यक्तित्व व बुद्धि महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालती हैं | इस लिए प्रस्तुत शोध में कि इन्दौर शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व तथा बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए के कक्षा 9 वी और 10 वी के विद्यार्थियों मे से 100 छात्राओ का चयन दैव न्यादर्श एवं सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया | विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लिया गया है। जिसमें शहरी व ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी तथा ये सामान्य अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, उम्रवार, लिंगवार, जातिवार, ब्यौरा आवृत्ति एवं प्रतिशत के साथ प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का उपयोग किया गया | जिसके उद्देश उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बीच व्यक्तित्व एवं बुद्धि के मध्य सहबंध एवं परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना | जिसमे शून्य परिकल्पना उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा | उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग, व्यक्तित्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं

पड़ेगा | निष्कर्ष स्वरूप उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई | उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों ( अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा संस्थान, शिक्षको, अभिभावकों, विद्यार्थियों, लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन, विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करना , विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन के लिए भविष्य में शोध के भविष्य में शोध हेतु सुझाव प्रदान किये गये

**DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.15692809**

**प्रस्तावना :-** शिक्षक भारत देश के निर्माता हैं इसीलिए कहा गया है कि भारत देश के भविष्य निर्माण विद्यालय की चार दीवारों में संपन्न होता है। किसी भी देश के भविष्य के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है एवं अपना जीवन समाज में ही व्यत्तित करता है अर्थात हम कह सकते है कि मनुष्य जन्म से लेकर म्रत्यु तक अपना सम्पूर्ण जीवन कल समाज में विभिन्न प्रकार के व्यवहार प्रदर्शित करता है | व्यवहार समाज द्वारा मान्य मान्यताओ के अनुरूप होते है | इन्ही व्यवहारों के कारण समाज में पहचाना जाता हैं और इसी कारण समाज में पहचाना जाता है | और इसी कारण प्रत्येक मानव को उसका व्यवहार समाज में मन सम्मान व प्रतिष्ठा दिलाने में सहायक होता हैं |

मानव के समस्त व्यवहारों को उसके विभिन्नों मनोवैज्ञानिक पहलु अभिन्न रूप से प्रभावित करते हैं | ये मनोवैज्ञानिक पहलु विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं जैसे व्यक्ति बुध्दि, समायोजन, अभिवृत्ति, सृजनात्मकता, रिस्क टेकिंग, रुचि, व्यक्तिगत विभिन्नता मनोवैज्ञानिक पहलुओ के कारण अलग-अलग व्यक्तियों का व्यवहार मनोवैज्ञानिकहोता है उपर्युक्त सभी मनोवैज्ञानिक पहलु व्यक्ति के व्यवहार को प्रभावित करते है तथा ये मनोवैज्ञानिक पहलू भी आपस मेएक –दूसरे से अंतर्संबंध होते है हम भी जानते है की मानव व्यवहार पर प्रभाव व्यक्ति /बालक की विकास की विभिन्न अवश्थाओ का भी पड़ता है| व्यक्ति के शैशवास्थी से लेकर वृद्धावस्था तक मनोवैज्ञानिक पहलूओं निरन्तिर विकास होते जाता हैं|

बालक के विकास की अवस्था शैशवावास्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था, बालक के विद्यालय में प्रवेश के पहले या साथ ही उसके अभिभावक कुछ न कुछ उपलब्धियों की आकांक्षा करते हैं कि मेरा बालक अच्छी व समाज अनरूप शिक्षा प्राप्त कर समाज में एक अच्छे व्यक्ति के रूप में स्थापित होकर स्वयं का व समाज का विकास करेगा | इन उपलब्धियों को प्राप्त करने के लिए बालक या विद्यार्थी के विभिन्न मनोवैज्ञानिक पहलु जैसे – समायोजन, व्यक्तित्व, बुद्धि सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों तरफ से इसे प्रभावित करते हैं |

विद्यालयीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना हैं | ताकि वह अपना व अपने समाज का विकास कर सके | इसलिए समाज विद्यालय के द्वारा छात्राओं के व्यक्तित्व के अनुसार उसे आगे की शिक्षा में दिशा निर्देशन किया जाता हैं | जिससे उसे पूर्व निर्धारित उपलब्धि प्राप्त हो सके | इन सभी तथ्यों से यह तात्पर्य लगा सकते है कि समायोजन व व्यक्तित्व की तरह ही बुद्धि भी

विद्यार्थी की उपलब्धि को प्रभावित करती हैं | क्योकि जिसकी बुद्धि अधिक होगी वह कम बुद्धि वाले की अपेक्षा अधिक व जल्दी उपलब्धि हासिल कर सकता हैं | बुद्धि के द्वारा ही बालक की क्षमता का पता लगाने में मदद मिलती हैं | जो व्यक्ति अपने पूर्व अनुभवों द्वारा कुशलतापूर्वक लाभ उठाने की क्षमता रखता हैं वह उतना ही अधिक बुद्धिमान समझा जाता हैं | इसलिए कहा गया है बुद्धि सीखने की योग्ता हैं या बुद्धि को नवीन परिस्थितियों में अच्छी प्रकार से समायोजन की योग्यता कहा गया है | बिद्धि प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से उपलब्धि को सरलतम रूप से प्राप्त करने में सहायक होती हैं|

उपर्युक्त मनोवैज्ञानिक पहलू के आधार पर निष्कर्ष निकाल सकते हैं कि बालक के विद्यालयीन उद्देशों को सर्वश्रेष्ठ सीमा तक प्राप्त करने में बालक की समायोजन क्षमता बालक का व्यक्तित्व व बुद्धि महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालती हैं | इनका ज्ञान होने पर का शिक्षक बालक के सर्वांगीण विकास में मदद कर सकता हैं | ताकि बालक स्वयं का चहुमुखी विकास कर सके |

**व्यक्तित्व :-** मनोवैज्ञानिक वर्तमान में व्यक्तित्व को सबसे अधिक महत्व देते हैं क्योकि व्यक्तित्व के अध्ययन कर सकते हैं, मनुष्य की कोई भी मानसिक व शारीरिक क्रिया व्यक्तित्व से पृथक नहीं हैं व्यक्तित्व वह समग्रता या योग्यता है गिससे व्यक्तित्व के सम्पूर्ण बाह्य एवं आन्तरिक गुणावगुणों सा समावेशित दिग्दर्शन होता हैं , व्यक्तिव में वे सभी मानसिक क्रियाएं सम्मिलित हैं जो गतिशील संगठन से व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती हैं तथा यह वातावरण से भी सबंधित हैं |

यदि ऐतहासिक द्रष्टि से देखे तो व्यक्तिव शब्द की व्युत्पत्ति अंग्रेजी भाषा के पर्सनेलिटी से हुई है और यह अंगेजी शब्द लैटिन भाषा के परसोना शब्द से बना है | जिसका अर्थ होता है मुखौटा जिसे अभिनेता लोग किसी नाटक में मनुष्य की बाहय शारीरिक आकृति उसकी वेशभूषा पहनावा आदि से हैं | लेकिन इसे सही नहीं मन जा सकता हैं क्योकि ऐसे कई उदाहरण मिल जायेगे जिन की बाह्य आकृति अनाकर्षक होते हुए भी उनके व्यक्तित्व आकर्षक एवं प्रभावी थे जैसे गाँधी, टैगोर, विनोबा भावे, लिंकन, बनार्ड शा, इन उदाहरणों से स्पस्ट है कि व्यक्तित्व केवल दिखाई देने वाले भौतिक आकर से ही सम्बन्ध नहीं रखता है वरन वह व्यक्ति के आन्तरिक पहलुओं से भी सम्बंध्राखता हैं |मनोवैज्ञानिक वर्तमान में व्यक्तित्व को सबसे अधिक महत्व देते हैं क्योकि व्यक्तित्व के अध्ययन कर सकते हैं, मनुष्य की कोई भी मानसिक व शारीरिक क्रिया व्यक्तित्व से पृथक नहीं हैं व्यक्तित्व वह समग्रता या योग्यता है गिससे व्यक्तित्व के सम्पूर्ण बाह्य एवं आन्तरिक गुणावगुणों सा समावेशित दिग्दर्शन होता हैं , व्यक्तिव में वे सभी मानसिक क्रियाएं सम्मिलित हैं जो गतिशील संगठन से व्यक्तित्व पर प्रभाव डालती हैं तथा यह वातावरण से भी सबंधित हैं |

**व्यक्तित्व परिभाषा :-** प्रचलित एवं सर्वमान्य परिभाषा

**आलपोर्ट के अनुसार –** व्यक्तिव मनोदैहिक का गत्यात्मक संगठन हैं जो सम्पूर्ण वातावरण के साथ उसके अपूर्व समायोजन का निर्धारण करता हैं|

**बोरिं के अनुसार -** वातावरण के साथ स्थयी एवं सामान्य समायोजन ही व्यक्तिव हैं |

**व्यक्तिव के सिद्धांत** - जैसे शैलडनका रचना सिद्धांत जिसमे गोलाकृति, आयताकृति, लम्बाकृति है | आलपोर्ट एवं कैटिल का 16 करक व्यक्तिव, युंग का बहिर्मुखी, अन्तर्मुखी, उभयमुखी व्यक्तिव का व्यवहार करता हैं |

**बुद्धि :-** प्रत्येक देश के प्राचीन इतिहास में बुद्धि से सम्बन्धित अनेक कथाएँ प्रचलित हैं, जटिल समस्याओं पहेलियों अथवा कौशल प्रदर्शनात्मक कार्यों द्वारा व्यक्ति में बुद्धि का स्तर जानने का प्रयत्न बहुत पहले से होता आ रहा हैं | आज भी बुद्धि का स्वरूप व उसका अर्थ जानने के लिए मनोवैज्ञानिक को उन क्रियाओं के ऊपर ध्यान देना पड़ता है जिसे जानने के लिए बुद्धि की आवश्यकता होती हैं अलग-अलन मनोवैज्ञानिक ने अपने- अपने अनुसार इसकों परिभाषित कर इसका अर्थ बताने की कोशिश की हैं | कुछ मनोवैज्ञानिक इसे अमूर्त कार्यों को करने की योग्यता मानते हैं एवं कुछ ने इसे सूक्ष्म विश्लेषण एवं अविष्कार करने की प्रवृति स्थिरता एवं विशुद्धता के रूप में स्वीकार किया हैं |

उपर्युक्त तथ्यों से स्पष्ट है कि बुद्धि व्यक्ति की वह क्षमता हैं जिसकें द्वारा व्यक्ति अपने वातावरण एवं परिस्थिति के प्रति अनुक्रिया करता हैं | वह वातावरण एवं परिस्थिति का शिकार नहीं बनता हैं बल्कि वह अपने आपकों समायोजित कर सके | इस प्रकार हम देखते हैं कि

बुद्धि एक जटिल मानसिक प्रक्रिया हैं या इसे एक ऐसी मानसिक योग्यता मन सकते हैं जों नई परिस्थितियों के साथ समायोजन करती हैं | और सम्बन्ध तथा असम्बन्ध स्थापित करते हैं | उच्चय विचारों का जन्म देती हैं | पुर्वनुभावो से ज्ञानार्जन कराती हैं |

**बुद्धि कि परिभाषा :-**

**वैक्षर के अनुसार-** बुद्धि व्यक्ति सर्वभोमिक शक्ति है जो ध्येय युक्त कार्यो करने तर्कपूर्ण चिन्तन करने तथा वातावरण के साथ प्रभापूर्ण समायोजन करने में सहायता देती है

**टर्मन के अनुसार-** एक व्यक्ति उसी अनुपात में बुद्धिमान होता है गिसमें वह वह अमूर्त रूप से चिन्तन करने की क्षमता रखता हैं |

**बुद्धि के सिद्धांत** बिने का एक तत्त्व, स्पीयरमेन का द्वितत्त्व, थार्नडाईक का बहुतत्त्व, गिलफर्ड का सक्रिय उत्पादन, स्टेनबर्ग का त्रिविमीय सिद्धांत हमें बुद्धि की संरचना का ज्ञान कराते हैं | बुद्धि अमूर्त, मूर्त , सामाजिक के प्रकार की होती है |

**समस्या कथन:-** प्रस्तुत अध्ययन की समस्या हैं कि इन्दौर शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व तथा बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन |

**उद्देश :-** प्रस्तुत अध्ययन के नि निम्मन उद्देश्य थे ...

1. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बीच व्यक्तित्त्व एवं बुद्धि के मध्य सहबंध ज्ञात करना |
2. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व का पता लगाना |
3. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना |
4. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र - छात्राओ (विद्यार्थियों) के बुद्धिमत्ता के माध्यों की तुलना करना |

**परिकल्पनाएं :-** प्रस्तुत अध्ययन में निम्मन शुन्य परिकल्पनाएँ -

1. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व एवं बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा |
2. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा |
3. उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र - छात्राओ (विद्यार्थियों) के बुद्धिमत्ता के माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा |

**परिसीमाएँ :-** प्रस्तुत अध्ययन में निम्म परिसीमाएँ है

1. न्यादर्श का चयन इन्दौर शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर विद्यालयों से किया गया |
2. सभी विद्यार्थियों हिंदी माध्यम के थे |
3. इन्दौर शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर विद्यालयों के केवल 9 वीं से 10 वी के विद्यार्थियों का न्यादर्श के रूप में चयन किया गया |
4. शोध के लिए केवल माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्य प्रदेश विद्यालयों के विद्यार्थियों का चयन किया गया |

**न्यादर्श : –** प्रस्तुत अध्ययन में इन्दौर के कक्षा 9 वी और 10 वी के विद्यार्थियों मे से 100 छात्राओ का चयन दैव न्यादर्श एवं सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया | विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लिया गया है। जिसमें शहरी व ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी तथा ये सामान्य अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, उम्रवार, लिंगवार, जातिवार, ब्यौरा आवृत्ति एवं प्रतिशत के साथ तालिका 1,2,व 3 में दिया गया है।

**तालिका – 1**

**विद्यार्थियों की कक्षा - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका**

| क्रमांक | कक्षा | विद्यार्थियों की संख्या | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|---|
| 1 | 9 वीं | 43 | 43 | 43 |
| 2 | 10 वीं | 57 | 57 | 57 |

**तालिका – 2**

**विद्यार्थियों की उम्रवार - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका**

| क्रमांक | उम्रवार | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | 15 | 24 | 24 |
| 2 | 16 | 17 | 17 |
| 3 | 17 | 39 | 39 |
| 4 | 18 | 20 | 20 |

**तालिका – 3**

**विद्यार्थियों की जातिवार - आवृत्ति एवं प्रतिशत को दर्शाती तालिका**

| क्रमांक | जातिवार | आवृत्ति | प्रतिशत |
|---|---|---|---|
| 1 | आरक्षित | 50 | 50 |
| 2 | अनारक्षित | 50 | 50 |

**उपकरण :-** प्रस्तुत अध्ययन में प्रदत्त संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया -

1. एस एस जलोटा व् एस .डी.कपूर द्वारा आइजेक्स माडसले पर्सनालिटी इन्वेंटरी
2. आर. के ओझा व के. रे. चौधरी वाचिक बुद्धि परीक्षण (1971)

**प्रदत्तों का संकलन : –** दत्त संकलन हेतु शोधकर्ता ने चयनित विद्यालयां में स्वयं दत्त संकलन का कार्य पूर्ण किया। शोधर्कता ने जाकर विद्यालय के प्रधानाचार्य की अनुमति प्राप्त करने के बाद मापनी को विद्यार्थियों द्वारा भरवाया व दत्त संकलन करेगा का कार्य पूर्ण किया | वर्तमान शोध पत्र हेतु दैव न्यादर्श विधि या सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका सम्बन्ध मध्य प्रदेश माध्यमिक शिक्षा परिषद से सम्बन्ध माध्यमिक विद्यालयों के कक्ष 9वी और 10वी छात्रों का सर्वेक्षण, आंकड़ो का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

**प्रदत्तों का विश्लेषण :-** प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का उपयोग किया गया |

**परिणाम एवं विवेचना:-**

**प्रथम शून्य परिकल्पना :** - उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा |

**तालिका – 4**

**विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के माध्य, मानक विचलन व सहसम्बन्ध**

| चार | N | माध्य | मानक विचलन | सहसम्बन्ध |
|---|---|---|---|---|
| व्यक्तित्व | 100 | 172.76 | 22.29 | 0.34 ** |
| बुद्धि | 100 | 66.89 | 13.95 | |

****01. सार्थकता के स्तर पर सार्थक –**

तालिका से सपष्ट होता हैं कि - उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के माध्य व मानक विचलन क्रमशः **172.76 , 22.29** व **66.89 , 13.95** हैं | व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सहसम्बन्ध गुणांक **0.34** हैं जो कि सार्थकता के स्तर 0.01 पर सार्थक हैं अतः शून्य परिकल्पना उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व एवं बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा निरस्त की जाती हैं | अतः कह सकते हैं कि उच्चय विद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध हैं |

**द्वितीय शून्य परिकल्पना :** उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग , व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा |

**तालिका – 5**

**उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि के के लिये 2 ग 3 कारकीय प्रारूप एनोवा सारांश**

| विचरण के स्त्रोत | df | SS | MSS | F |
|---|---|---|---|---|
| वर्ग | 1 | 8.85 | 8.85 | 0.05 |
| व्यक्तित्व स्तर | 2 | 951.67 | 475.84 | 2.45 |
| वर्ग X व्यक्तित्व स्तर | 2 | 46.61 | 23.31 | 0.12 |
| त्रुटि | 94 | 18199.85 | 193.62 | |

**सारणी 5 से स्पष्ट होता हैं कि –**

- **वर्ग** के लिए **F** मूल्य **0.05** है जो कि **df (1.94 )** व्यक्तित्व के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं हैं |
- **व्यक्तित्व स्तर** के लिए **F** मूल्य **2.45** है जो कि **df (2.94)** के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं हैं
- **वर्ग व व्यक्तित्व स्तरों** की अन्तक्रिया के लिए **F** मूल्य **12** हैं जो कि **df (2.94)** के लिए सार्थकता के स्तर **0.5** पर सार्थक नहीं है |

उपरोक्त से स्पस्ट है कि उच्चय माध्यमिक माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग, व्यक्तित्व स्तर व इनकी अंतर्क्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेता हैं | अतः शून्य परिकल्पना उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग , व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा , निरस्त नहीं की जाती हैं | अतः यह कहा जाता हैं कि उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि वर्ग, व्यक्तित्व के स्तरों व इनकी अन्तर्क्रिया के प्रभाव से स्वत्रंत है |

**तृतीय शून्य परिकल्पना : -** उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के बुद्धिमत्ता के माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा |

**तालिका – 6**

**विद्यार्थी N, df, Mean, SD,व t मूल्य**

| आरक्षित विद्यार्थी | N | df | mean | मानक विचलन (SD) | t फलांक |
|---|---|---|---|---|---|
| छात्र | 57 | 98 | 66.73 | 13.41 | 0.09 |
| छात्राएं | 43 | | 67.00 | 14.77 | |

**तालिका 6 से स्पष्ट होता हैं कि –** आरक्षित छात्रों का बुद्धि माध्य 66.73 तथा मानक विचलन 13.41 हैं तथा अनारक्षित छात्राओं का बुद्धि माध्य 67.00 तथा मानक विचलन 14.77 हैंजिसके परीक्षण का मूल्य 0.09 प्राप्त हुआ जों की स्वतंत्रता की कोटि (df) 98 के लिए सार्थकता के स्तर पर सार्थक नहीं हैं अतः शून्य परिकल्पना की उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर पर विभिन्न कक्षा स्तरों

के छात्र – छात्राओ (विद्यार्थियों) के बुद्धिमत्ता के माध्यों में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा | निरस्त नहीं की जाती हैं | अर्थात कह सकते है कि उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई) स्तर आरक्षित व अनारक्षित वर्ग की विद्यार्थियों में बुद्धि के आधार पर कोई अन्तर नहीं हैं |

टिप :- द्वितीय उद्देश्य की प्राप्ति के लिए माडसले व्यक्तित्व परीक्षण द्वारा उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व परीक्षण कर उन्हें अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी व उभयमुखी व्यक्तित्व स्तरों में विभाजित किया गया जो तालिका 7 में दर्शाया गया हैं |

**तालिका 7**

**विद्यार्थियों की व्यक्तिवार सूची**

| क्रमांक | व्यक्तित्व | विद्यार्थियों की संख्या |
|---|---|---|
| 1 | अन्तर्मुखी | 40 |
| 2 | बहिर्मुखी | 34 |
| 3 | उभयमुखी | 26 |

**शोध निष्कर्ष :-** प्रस्तुत अध्ययन के निम्न मुख्य निष्कर्ष हैं –

1. उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी |
2. उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई |
3. उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों ( अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी |

**शैक्षिक निहितार्थ :-**

**1. शिक्षकों के लिए :-** विद्यार्थी के मानसिक स्तर एवं शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों की जानकारी शिक्षक को समग्र रूप से होनी चाहिए | उच्चतर माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के शिक्षकों को और अधिक महत्त्वपूर्ण जिम्मेदारियों का निर्वहन करना पड़ता हैं | क्योकि इस उम्र के विद्यार्थियों की शारीरिक समस्याओं के साथ-साथ उनकी मानसिक स्थिति, सामाजिक परिवेश व प्रष्ठभूमि और उसकी शैक्षिक उपलब्धि को भी प्रभावित करने वाले प्रमुख कारकों को समझने का अवसर मिलेगा एवं बालक के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करने का प्रयास कर सकते हैं और वास्तविक रूप से राष्ट्र निर्माण में अपने दायित्वों का निर्वहन कर सकते हैं |

**2.अभिभावकों के लिए :-** सामाजिक परिपेक्ष्य में विद्यालय के साथ सामंजस्य स्थापित करने की द्रष्टि एवं सर्वकालिक, सार्वभौमिक, समाज की अनुभूति के कारण विद्यालय और समाज में सामंजस्य स्थापित करना वर्त्तमान समय की प्राथमिक आवश्यकता बनती जा रही हैं और ऐसे प्रयास शुरू किये जा चुके हैं | एक आदर्श समाज की स्थापना कल्पना मानवतावादी द्रष्टिकोण के साथ जुडी हुई हैं और अभिभावकों के लिए यह जानना जरुरी हैं कि भावी राष्ट्र निर्माण के लिए शिक्षा के द्वार किन वि संगतियों को दूर किया जाना हैं और वह किस प्रकार सम्मेक द्रष्टिकोण अपनाकर विद्यालय और समाज की मदद कर सकता हैं | अतः एवं उसका शिक्षा का सामाजिक रूप से प्रभावित करने वाले कारकों का ज्ञान आवश्यक हैं | और ऐसा होने से समाज में अपने वास्तविक दायित्त्वों के विर्वाहन में अपनी भूमिका निभा सकता हैं |

**3.विद्यार्थियों के लिए :-** अपनी सामंजस्य और सहानुभूति व्यवहार के विकास में सहायक होता हैं | बालक कच्ची मिट्टी के घड़े के समान होते हैं और वातावरणीय थपेड़ों से उसमें परिपक्वता आती रहती हैं | वातावरण जिसमें कि यह स्वछन्द रूप से विचरण करता हैं | यदि पहले से ही सकारात्मक प्रभाव पैदा करने वाले कारकों से आभ्छादित कर दिया तों जाने-अनजाने दोनों माध्यमों के द्वारा उसमें परिपक्वता आएगी और सामाजिक वैमनस्यता का कोई स्थान ही नहीं रहेगा | अतः एवं शैक्षिक वातावरण को यदि पहले से ही उद्देश्यों के अनुकूल निर्मित कर लिया जाए तो उसका विद्यार्थी की सोच पर अनुकूल प्रभाव पड़ेगा |

**4. लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं के लिए :-** संविधान की मंशा के अनुरूप वर्तमान शैक्षिक चुनोतिया जैसे आधार स्तर पर सार्वभौमिकरण, महिला व्यवसायीकरण शिक्षा, शिक्षा की समस्याएं उदयीमान भारत में उभरती भविष्य की संभावना जैसे – दुरवर्ती शिक्षा,सूचना सम्प्रेषण तकनीकी शिक्षा का विकेंद्रीकरण और निजीकरण जैसे समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रभावित करने वाले कारकों की खोज एवं उनका निजीकरण जैसे समस्याओं के समाधान की दिशा में प्रभावित करने वाले कारकों की खोज एवं उनका निराकरण किया जा सकता हैं |

**भविष्य में शोध हेतु सुझाव :-** प्रस्तुत अध्ययन के सन्दर्भ से भविष्य में शोध हेतु निम्न सुझाव है –

1. प्रत्येक उच्च शिक्षा संस्थान में अनिवार्य रूप से अनुसूचित जाती, जनजाति विकास अनुसंधान शोध केन्द्र होना चाहिए |( ताकि आरक्षण की समस्या को समाप्त किया जा सके|)
2. भविष्य में विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन किया जा सकता हैं |
3. उच्च शिक्षा संस्थान जो इन्दौर में विस्थापित हैं उनके विद्यार्थी-विद्यार्थियों पर शोध करना |
4. सरकारी और निजी उच्च शिक्षा संस्थान पर शोध होना चाहिए |
5. भविष्य में विद्यार्थियों के व्यक्तित्व और बुद्धि को को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन किया जा सकता हैं

**उपसंहार :-** शिक्षक भारत देश के निर्माता हैं इसीलिए कहा गया है कि भारत देश के भविष्य निर्माण विद्यालय की चार दीवारों में संपन्न होता है। किसी भी देश के भविष्य के निर्माण में शिक्षकों की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि शिक्षण प्रक्रिया में शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण एवं सर्वोपरि है। विद्यालयीन शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालकों के व्यक्तित्व का सम्पूर्ण विकास करना हैं | ताकि वह अपना व अपने समाज का विकास कर सके | इसलिए समाज विद्यालय के द्वारा छात्राओं के व्यक्तित्व के अनुसार उसे आगे की शिक्षा में दिशा निर्देशन किया जाता हैं | जिससे उसे पूर्व निर्धारित उपलब्धि प्राप्त हो सके | बालक के विद्यालयीन उद्देशों को सर्वश्रेष्ठ सीमा तक प्राप्त करने में बालक की समायोजन क्षमता बालक का व्यक्तित्व व बुद्धि महत्त्वपूर्ण रूप से प्रभाव डालती हैं | इस लिए प्रस्तुत शोध में कि इन्दौर शहर के उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालयीन (हाई ) स्तर के आरक्षित एवं अनारक्षित वर्ग के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व तथा बुद्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए के कक्षा 9 वी और 10 वी के विद्यार्थियों मे से 100 छात्राओ का चयन दैव न्यादर्श एवं सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया | विद्यार्थियों को न्यादर्श रूप में लिया गया है। जिसमें शहरी व ग्रामीण छात्र एवं छात्राओं को सम्मिलित किया गया जिनकी आयु 15 से 18 वर्ष के मध्य थी तथा ये सामान्य अनुसूचित जाती, अनुसूचित जनजाति एवं पिछड़ा वर्ग से सम्बन्धित कक्षावार, उम्रवार, लिंगवार, जातिवार, ब्यौरा आवृत्ति एवं प्रतिशत के साथ प्रदत्तों के विश्लेषण हेतु प्रतिशत, स्पीयर, स्वतंत्र टी – परीक्षण व द्वी वे एनोवा सांख्यिकी का उपयोग किया गया | जिसके उद्देश उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बीच व्यक्तित्त्व एवं बुद्धि के मध्य सहबंध एवं परस्पर अंतक्रिया के प्रभाव का अध्ययन करना | जिसमे शून्य परिकल्पना उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्त्व एवं बुद्धिमत्ता के मध्य कोई सार्थक सहसंबंध नहीं होगा | उच्चत्तर माध्यमिक विद्यालय (हाई ) स्तर के विद्यार्थियों के बुद्धि पर वर्ग, व्यक्तित्त्व लक्षण और उनकी परस्पर अंतक्रिया का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पड़ेगा | निष्कर्ष स्वरूप उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व व बुद्धि के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों की बुद्धि पर वर्गों (आरक्षित व अनारक्षित) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात दोनों वर्गों की बुद्धि सामान पाई गई | उच्चय माध्यमिक विद्यालय (हाई) स्तर के विद्यार्थियों के व बुद्धि पर व्यक्तित्व स्तरों ( अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी) का कोई सार्थक प्रभाव नहीं पाया गया | अर्थात अन्तर्मुखी, बहिर्मुखी, उभयमुखी के मध्य सार्थक धनात्मक सहसम्बन्ध पाया गया | अर्थात जिन विद्यार्थियों का व्यक्तित्व बहिर्मुखी था उनकि बुद्धि भी उच्च पाई गयी | प्रस्तुत अध्ययन शिक्षा संस्थान, शिक्षको, अभिभावकों, विद्यार्थियों, लेखक एवं पाठयक्रम निर्माताओं भविष्य में विद्यार्थियों के शैक्षिक उपलब्धि को प्रभावित करने वाले कारकों हेतु संशोधन, विद्यार्थियों के लिए समान अवसर प्रदान करना , विद्यार्थियों के समायोजन हेतु संशोधन के लिए भविष्य में शोध के भविष्य में शोध हेतु सुझाव प्रदान किये गये |

**सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :-**


1 . अग्रवाल, आर.एन. (1968. प्रयोगात्मक, आगरा, शांति साहित्य संयोजन गृह

2 . अस्थाना, विपिन (1985. मनोविज्ञान शोध विधिया,आगरा विनोद पुस्तक मंदिर

3. भटनागर,सुरेश (2003. शिक्षा मनोविज्ञान, मेरठ इंटर्नेशनल पब्लिशिंग हॉउस

4. माथुर, एस.एस. (1998. शिक्षा मनोविज्ञान, आगरा विनोद पुस्तक मंदिर

5. पाल, हंसराज (2008. उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान, दिल्ली वि.वि. हिन्दी माध्यम कार्यालय निदेशालय

6. वर्मा, प्रीति एवं अन्य (1996). आधुनिक प्रयोगात्मक मनोविज्ञान आगरा विनोद पुस्तक मंदिर

7. तिवारी, ए.एन. (1993). शिक्षा मनोविज्ञान भाग-2 लखनऊ उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

8. सिन्हा, वी. सी . एवं अन्य (1988). सामाजिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी नई दिल्ली नैशनल पब्लिकेशन हाउस

9. शर्मा, एस.एन. (1973). आधुनिक सामान्य मनोविज्ञान , एच.पी. भार्गव बुक हाउस

10. शर्मा,जे.डी. (1979 मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धांत, आगरा पुस्तक मंदिर

11. पाल, हंसराज (2004). शैक्षिक शोध,भोपाल म.प्र. हिन्दी ग्रन्थ अकादमी

12. मुखर्जी, कमल (1972) . सामाजिक सर्वेक्षण एवं शोध, नई दिल्ली सरस्वती सदन

13. माथुर, एस.एस. (1998) . शिक्षा मनोविज्ञान, अगर विनोद पुस्तक मंदिर

15. माखीजा, गोपालकृष्ण (1986) . मनोविज्ञान एवं शिक्षा में सरल सांख्यिकी, आगरा लक्ष्मीनारायण अग्रवाल

16. लुम्बा, राममूर्ति (1964) . मनोविज्ञान के छात्र लखनऊ हिन्दी समिति सूचना विभाग

17. कौल, बंकिम (1964) . शैक्षिक अनुसंधान की कार्यप्रणाली, नै दिल्ली विकास पब्लिशिंग हाउस

18. कपिल,एच. (1992) . सांख्यिकी के मूल तत्व आगरा विनोद पुस्तक मंदिर

20. गोयल,बी.आर. (1989) . एज्युकेशन हरिजन गुडगाँव एकेडमी प्रेस

21. Buch, M.B. (Ed) (1979). Second survey of research in education, voll. II, New Delhi N.C.E.R.T.

22. Buch, M.B. (Ed) (1991). Fourth survey of research in education. Vol. II New Delhi N.C.E.R.T.

23. Buch, M.B. (Ed) (1977). Fifth survey of research in education. Vol. I & II New Delhi N.C.E.R.T.